International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 74-76

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 74-76
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-09-2019
Accepted: 16-10-2019

मधु पटेल
(1). शोधच्छात्रा, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2). महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मधु पटेल
(1). शोधच्छात्रा, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2). महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

काशिका के तृतीय अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश (णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्, विभाषा धेट्श्व्योः)

मधु पटेल

सारांश
मेरे शोधप्रबन्धका शीर्षक **'**काशिकाके तृतीय अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश**'** है। वस्तुतः काशिकाकी स्वकीय शैली यह है कि उसमें जो उदाहरण दिये जाते हैं उनका प्रक्रियानिर्देश प्रायः किया ही नहीं जाता है और यदि कहींपर किया भी जाता है तो वह इतना निगूढ होता है कि उतनेमात्रसे उदाहरणोंकी प्रक्रिया स्पष्ट नहीं हो पाती है और प्रक्रियाको समझे विना शास्त्रकी चरितार्थता असम्भव है। यही कारण मेरे इस शोधप्रबन्धकी अपरिहार्यताको प्रदर्शित करता है जो कि विना प्रक्रियानिर्देशके सम्भव नहीं है। मेरा यह प्रयास उसी दिशामें है।

कूटशब्दः- काशिका, णिश्रिद्रुस्रुभ्यः, चङ्, धेट्श्व्योः, प्रक्रिया।

प्रक्रियानिर्देश–

अचीकरत्

डुकृञ् (कृ)– धातु। 'हेतुमति च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/26) इस सूत्रसे कृ इससे पर णिच् (इ) यह प्रत्यय हुआ–

कृ इ– 'अचो ञ्णिति' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/115) इस सूत्रसे ऋ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ–

क् आर् इ– 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे क् आर् इ इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–

क् आर् इ ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

क् आर् इ त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे क् आर् इ इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–

क् आर् इ च्लि त्– 'णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/48) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश हुआ–

क् आर् इ अ त्– 'णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/1) इस सूत्रसे आ इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (अ) यह आदेश हुआ–

क् अ र् इ अ त्– 'णेरनिटि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/51) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

क् अ र् अ त्– 'चङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/11) इस सूत्रसे क् अ र् इसके स्थानमें कार् कर् यह द्विर्वचनादेश हुआ–

कार् कर् अ त्– 'ह्रस्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/59) इस सूत्रसे आ इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (अ) यह आदेश हुआ–

क् अ र् कर् अ त्– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे क् र् इन दोनोंके स्थानमें क् यह शेषादेश हुआ–

क् अ कर् अ त्– 'कुहोश्चुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/62) इस सूत्रसे क् इसके स्थानमें च् यह आदेश हुआ–

च् अ कर् अ त्– 'सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/93) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें सन्वत् (इ) यह आदेश हुआ–

च् इ कर् अ त्– 'दीर्घो लघोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/94) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ई) यह आदेश हुआ–
च् ई कर् अ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे च् ई कर् अ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ च् ई कर् अ त्– अचीकरत्।। इति सिद्धम्।।

अशिश्रियत्

श्रिञ् (श्रि)– धातु। 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे श्रि इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
श्रि ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
श्रि त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे श्रि इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–
श्रि च्लि त्– 'णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/48) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश हुआ–
श्रि अ त्– 'चङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/11) इस सूत्रसे श्रि इसके स्थानमें श्रि श्रि यह द्विर्वचनादेश हुआ–
श्रि श्रि अ त्– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे श् र् इन दोनोंके स्थानमें श् यह शेषादेश हुआ–
श् इ श्रि अ त्– 'अचि श्नुधतुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/77) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें इयङ् (इय्) यह आदेश हुआ–
श् इ श्र् इय् अ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे श् इ श्र् इय् अ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ श् इ श्र् इय् अ त्– अशिश्रियत्।। इति सिद्धम्।।

अदधत्

धेट् (धे)– धातु। 'आदेच उपदेशेऽशिति' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/44) इस सूत्रसे ए इसके स्थानमें आ यह आदेश हुआ–
ध् आ– 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे ध् आ इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
ध् आ ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
ध् आ त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे ध् आ इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–
ध् आ च्लि त्– 'विभाषा धेट्श्व्योः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/49) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश विकल्पसे हुआ–
ध् आ अ त्– 'आतो लोप इटि च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/64) इस सूत्रसे आ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
ध् अ त्– 'चङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/11) इस सूत्रसे ध् इसके स्थानमें ध ध् यह द्विर्वचनादेश हुआ–
ध ध् अ त्– 'ह्रस्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/59) इस सूत्रसे आ इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (अ) यह आदेश हुआ–
ध् अ ध् अ त्– 'अभ्यासे चर्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/53) इस सूत्रासे ध् इसके स्थानमें जश् (द्) यह आदेश हुआ–
द् अ ध् अ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रासे द् अ ध् अ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ द् अ ध् अ त्– अदधत्।। इति सिद्धम्।।

अधात्

धेट् (धे)– धातु। 'आदेच उपदेशेऽशिति' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/44) इस सूत्रसे ए इसके स्थानमें आ यह आदेश हुआ–
ध् आ– 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे ध् आ इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
ध् आ ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
ध् आ त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे ध् आ इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–
ध् आ च्लि त्– 'विभाषा धेट्श्व्योः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/49) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश नहीं हुआ उस पक्षमें 'च्लेः सिच्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/44) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें सिच् (स्) यह आदेश हुआ–
ध् आ स् त्– 'विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/78) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन विकल्पसे हुआ–
ध् आ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे ध् आ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ ध् आ त्– अधात्।। इति सिद्धम्।।

अधासीत्

धेट् (धे)– धातु। 'आदेच उपदेशेऽशिति' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/44) इस सूत्रसे ए इसके स्थानमें आ यह आदेश हुआ–
ध् आ– 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे ध् आ इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
ध् आ ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
ध् आ त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे ध् आ इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–
ध् आ च्लि त्– 'विभाषा धेट्श्व्योः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/49) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश नहीं हुआ उस पक्षमें 'च्लेः सिच्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/44) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें सिच् (स्) यह आदेश हुआ–
ध् आ स् त्– 'विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/78) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन नहीं हुआ उस पक्षमें 'अस्तिसिचोऽपृक्ते' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/96) इस सूत्रसे त् इसके आदिमें ईट् (ई) यह आगम हुआ–
ध् आ स् ई त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे ध् आ स् इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ ध् आ स् ई त्– अधासीत्।। इति सिद्धम्।।

अशिश्वियत्

टुओश्वि (श्वि)– धातु। 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे श्वि इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
श्वि ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
श्वि त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे श्वि इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–
श्वि च्लि त्– 'विभाषा धेट्श्व्योः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/49) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश विकल्पसे हुआ–
श्वि अ त्– 'चङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/11) इस सूत्रसे श्वि इसके स्थानमें श्वि श्वि यह द्विर्वचनादेश हुआ–
श्वि श्वि अ त्– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे श् व् इन दोनोंके स्थानमें श् यह शेषादेश हुआ–

श् इ श्वि अ त्– 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/77) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें इयङ् (इय्) यह आदेश हुआ–
श् इ श्व् इय् अ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे श् इ श्व् इय् अ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ श् इ श्व् इय् अ त्– अशिश्वियत्।। इति सिद्धम्।।
अश्वत्

टुओश्वि (श्वि)– धातु। 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे श्वि इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
श्वि ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
श्वि त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे श्वि इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–
श्वि च्लि त्– 'विभाषा धेट्श्व्योः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/49) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश नहीं हुआ उस पक्षमें 'ज॒स्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/58) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें अङ् (अ) यह आदेश विकल्पसे हुआ–
श्वि अ त्– 'श्वयतेरः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/18) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें अ यह आदेश हुआ–
श्व् अ अ त्– 'अतो गुणे' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/94) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पररूप (अ) यह एकादेश हुआ–
श्व् अ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे श्व् अ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ श्व् अ त्– अश्वत्।। इति सिद्धम्।।

अश्वयीत्

टुओश्वि (श्वि)– धातु। 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे श्वि इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
श्वि ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
श्वि त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे श्वि इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–
श्वि च्लि त्– 'विभाषा धेट्श्व्योः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/49) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें च्लि इसके स्थानमें चङ् (अ) यह आदेश नहीं हुआ उस पक्षमें 'ज॒स्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/58) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें अङ् (अ) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें च्लि इसके स्थानमें अङ् (अ) यह आदेश नहीं हुआ उस पक्षमें 'च्लेः सिच्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/44) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें सिच् (स्) यह आदेश हुआ–
श्वि स् त्– 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/35) इस सूत्रसे स् इसके आदिमें इट् (इ) यह आगम हुआ–
श्वि इ स् त्– 'अस्तिसिचोऽपृक्ते' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/96) इस सूत्रसे त् इसके आदिमें ईट् (ई) यह आगम हुआ–
श्वि इ स् ई त्– 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/84) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें गुणसंज्ञक (ए) यह आदेश हुआ–
श्व् ए इ स् ई त्– 'इट ईटि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/28) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
श्व् ए इ ई त्– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे इ ई इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ई) यह एकादेश हुआ–
श्व् ए ई त्– 'एचोऽयवायावः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/75) इस सूत्रसे ए इसके स्थानमें अय् यह आदेश हुआ–
श्व् अय् ई त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे श्व् अय् ई इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ श्व् अय् ई त्– अश्वयीत्।। इति सिद्धम्।।

सहायकग्रन्थसूची

1. अष्टाध्यायीसूत्रापाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. धातुपाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. अष्टाध्यायीभाष्यम् (प्रथमावृत्तिः), त्रयो भागाः– लेखकौ– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
4. माधवीया धातुवृत्तिः (सायणविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
5. काशिका (वामनजयादित्यविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
6. व्याकरणमहाभाष्यम् (महर्षिपतञ्जलिमुनिविरचितम्, प्रदीपोद्द्योतटीकाद्वयसहितम्), षड् भागाः– सम्पादकः– श्री भार्गव शास्त्री, प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।